

प्राचीन मध्य तथा आधुनिक काल में वाद्य वर्गीकरण

उज्ज्वल

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, संगीत गायन, एम डी एस डी कॉलेज, अंबाला शहर

सार

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय संगीत परंपरा में वाद्य यंत्रों के वर्गीकरण की अवधारणा का प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। वाद्य वर्गीकरण संगीत के अध्ययन की एक महत्वपूर्ण प्रणाली है, जिसके माध्यम से वाद्य यंत्रों को उनकी ध्वनि उत्पादन विधि, बनावट तथा संगीत में उनकी भूमिका के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है। प्राचीन काल में तत, अवनद्ध, सुषिर एवं घन—इन चार प्रमुख वर्गों के माध्यम से वाद्यों को समझा गया, जो आगे चलकर मध्य काल में नए विकसित वाद्यों के समावेश के साथ अधिक समृद्ध हुआ। आधुनिक काल में तकनीकी प्रगति के कारण विद्युत वाद्यों का विकास हुआ, जिससे वाद्य वर्गीकरण की परिधि और व्यापक हो गई। इस अध्ययन का उद्देश्य वाद्य वर्गीकरण की ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया, उसकी आवश्यकता तथा संगीत शिक्षा, वादन, निर्माण और अनुसंधान में उसके महत्व को रेखांकित करना है। शोधपत्र यह स्पष्ट करता है कि वाद्य वर्गीकरण न केवल संगीत के सैद्धांतिक अध्ययन को सरल बनाता है, बल्कि भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा और उसके सतत विकास को समझने में भी सहायक सिद्ध होता है।

कुंजी शब्द : वाद्य वर्गीकरण; भारतीय संगीत; तत वाद्य; अवनद्ध वाद्य; सुषिर वाद्य; घन वाद्य; विद्युत वाद्य; ध्वनि उत्पादन; संगीत शास्त्र; वाद्य परंपरा

भूमिका

वाद्य वर्गीकरण संगीत में वाद्य यंत्रों को उनकी विशेषताओं] बनावट और ध्वनि उत्पादन के आधार पर समूहों में विभाजित करने की एक प्रक्रिया है। यह वर्गीकरण संगीतकारों] विद्वानों और वाद्य निर्माताओं के लिए वाद्य यंत्रों को समझने उनका अध्ययन करने

और उनका उपयोग करने में मदद करता है। वाद्य वर्गीकरण के मुख्य आधार ध्वनि उत्पादन का तरीका% वाद्य यंत्र ध्वनि कैसे उत्पन्न करते हैं] इसके आधार पर उन्हें वर्गीकृत किया जाता है। जैसे: कुछ वाद्य यंत्रों में ध्वनि तारों को हिलाकर उत्पन्न होती है।

कुछ में हवा को कंपित करके और कुछ में वस्तुओं को टकराकर।

बनावट: वाद्य यंत्रों की बनावट आकार और सामग्री के आधार पर भी उन्हें वर्गीकृत किया जाता है।

उपयोग: वाद्य यंत्रों का उपयोग किस प्रकार के संगीत में किया जाता है। इसके आधार पर भी उन्हें वर्गीकृत किया जाता है। वाद्य वर्गीकरण के मुख्य प्रकार तत् वाद्य ये वे वाद्य यंत्र हैं जिनमें ध्वनि तारों को हिलाकर उत्पन्न होती है। जैसे: सितार, वीणा, गिटार आदि। सुषिर वाद्य ये वे वाद्य यंत्र हैं जिनमें ध्वनि हवा को कंपित करके उत्पन्न होती है। जैसे: बांसुरी, शहनाई, तुरही आदि। अवनद्ध वाद्य ये वे वाद्य यंत्र हैं जिनमें ध्वनि चमड़े या किसी अन्य पदार्थ से बने पर्दे पर आघात करके उत्पन्न होती है। जैसे: तबला, ढोल, मृदंग आदि। घन वाद्य ये वे वाद्य यंत्र हैं जिनमें ध्वनि किसी ठोस वस्तु को टकराकर उत्पन्न होती है। जैसे: मंजीरा, करताल, घंटियाँ आदि।

भारतीय संगीत में वाद्य वर्गीकरण का एक समृद्ध इतिहास रहा है। प्राचीन काल से ही वाद्यों को उनकी ध्वनि उत्पादन के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया जाता रहा है। यह वर्गीकरण न केवल वाद्यों की विशेषताओं को समझने में मदद करता है बल्कि उनके विकास और उपयोग के इतिहास को भी जानने में सहायक होता है। प्राचीन काल प्राचीन काल में वाद्यों को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित

किया गया था & तत् वाद्य & वे वाद्य जिनमें ध्वनि तारों के कंपन से उत्पन्न होती है। जैसे वीणा, सितार, तानपुरा आदि। अवनद्ध वाद्य वे वाद्य जिनमें ध्वनि चमड़े से मढ़े हुए सतह पर आघात करने से उत्पन्न होती है। जैसे: ढोल, तबला, मृदंग आदि। घन वाद्य वे वाद्य जिनमें ध्वनि ठोस वस्तुओं के आपस में टकराने से उत्पन्न होती है। जैसे मंजीरा, करताल, घंट आदि। सुषिर वाद्य वे वाद्य जिनमें ध्वनि हवा के प्रवाह से उत्पन्न होती है। जैसे बांसुरी, शहनाई, शंख आदि। मध्य काल मध्य काल में भी वाद्यों का वर्गीकरण प्राचीन काल के समान ही रहा। लेकिन इस काल में कुछ नए वाद्यों का भी विकास हुआ। जैसे: रबाब, सरोद, पखावज आदि।

आधुनिक काल

आधुनिक काल में वाद्यों के वर्गीकरण में कुछ परिवर्तन हुए हैं। अब वाद्यों को उनकी ध्वनि उत्पादन के साथ-साथ उनकी बनावट और उपयोग के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है। आधुनिक वर्गीकरण के अनुसार वाद्यों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

तंतु वाद्य% वे वाद्य जिनमें ध्वनि तारों के कंपन से उत्पन्न होती है। जैसे वीणा, सितार, गिटार, वायलिन आदि।

अवनद्ध वाद्य:

वे वाद्य जिनमें ध्वनि चमड़े से मढ़े हुए सतह पर आघात करने से उत्पन्न होती है। जैसे ढोल, तबला, मृदंग, पखावज आदि।

सुषिर वाद्य: वे वाद्य जिनमें ध्वनि हवा के प्रवाह से उत्पन्न होती है। जैसे बांसुरी, शहनाई, क्लैरनेट, ट्रम्पेट आदि।

घन वाद्य: वे वाद्य जिनमें ध्वनि ठोस वस्तुओं के आपस में टकराने से उत्पन्न होती है। जैसे मंजीरा, करताल, घंट, झांझ आदि।

विद्युत वाद्य: वे वाद्य जिनमें ध्वनि विद्युत के माध्यम से उत्पन्न होती है। जैसे सिंथेसाइज़र, इलेक्ट्रिक गिटार, इलेक्ट्रिक वायलिन आदि। यह वर्गीकरण वाद्यों को समझने और उनका अध्ययन करने में मदद करता है। इसके साथ ही यह संगीतकारों को विभिन्न प्रकार के वाद्यों का उपयोग करके नए संगीत रूपों की रचना करने के लिए प्रेरित करता है।

वाद्य वर्गीकरण की आवश्यकता

संगीत के अध्ययन और समझ को सरल बनाने के लिए होती है। यह विभिन्न वाद्य यंत्रों को उनकी विशेषताओं] ध्वनि उत्पादन के तरीकों और संगीत में उनकी भूमिका के आधार पर समूहीकृत करने में मदद करता है।

वाद्य वर्गीकरण के कुछ मुख्य कारण:

अध्ययन में सरलता: वर्गीकरण के माध्यम से वाद्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना आसान हो जाता है। एक ही समूह के वाद्यों में कुछ सामान्य विशेषताएं होती हैं। जिससे उनके बारे में सीखना अधिक व्यवस्थित हो जाता है।

ध्वनि की पहचान: वर्गीकरण से वाद्यों की ध्वनि को पहचानने में मदद मिलती है। विभिन्न समूहों के वाद्यों की ध्वनि में अंतर होता है। जिसे वर्गीकरण के आधार पर समझा जा सकता है।

संगीत में भूमिका: वर्गीकरण से यह समझने में मदद मिलती है कि विभिन्न वाद्य संगीत में क्या भूमिका निभाते हैं। कुछ वाद्य लय प्रदान करते हैं। कुछ राग का विस्तार करते हैं और कुछ विशिष्ट भावों को व्यक्त करते हैं।

वाद्यों का विकास: वर्गीकरण के माध्यम से वाद्यों के विकास का अध्ययन किया जा सकता है। समय के साथ वाद्यों के स्वरूप और ध्वनि उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन होता है। जिसे वर्गीकरण के आधार पर ट्रैक किया जा सकता है।

वाद्य वर्गीकरण के कुछ प्रमुख आधार

उत्पत्ति% वाद्य किस प्रकार से ध्वनि उत्पन्न करते हैं। इसके आधार पर उनका वर्गीकरण किया जाता है। जैसे& तंतु वाद्य, अवनद्ध वाद्य, घन वाद्य और सुषिर वाद्य। आकार% वाद्यों के आकार और बनावट के आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया जाता है।

संगीत में भूमिका% वाद्य संगीत में क्या भूमिका निभाते हैं। इसके आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया जाता है। जैसे: ताल वाद्य, राग वाद्य और सहायक वाद्य। वाद्य वर्गीकरण संगीत के अध्ययन और समझ के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह वाद्यों के बारे में जानकारी को व्यवस्थित करने और उनकी विशेषताओं को समझने में मदद करता है।

वाद्य वर्गीकरण का महत्व

वाद्य यंत्रों को समझने में मदद% वाद्य वर्गीकरण हमें वाद्य यंत्रों की विशेषताओं उनकी ध्वनि उत्पादन के तरीके और उनके उपयोग के बारे में जानने में मदद करता है। संगीतकारों के लिए उपयोगी% वाद्य वर्गीकरण संगीतकारों को विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों में से अपने संगीत के लिए उपयुक्त वाद्य यंत्रों का चयन करने में मदद करता है। वाद्य निर्माताओं के लिए उपयोगी वाद्य वर्गीकरण वाद्य निर्माताओं को विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों के डिजाइन और निर्माण में मदद करता है। संगीत के अध्ययन में सहायक% वाद्य वर्गीकरण संगीत के इतिहास विकास और विभिन्न संस्कृतियों में संगीत वाद्य यंत्रों के उपयोग के बारे में अध्ययन करने में सहायक होता है।

निष्कर्ष: वाद्य वर्गीकरण संगीत में वाद्य यंत्रों को समझने और उनका उपयोग करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह संगीतकारों विद्वानों वाद्य

निर्माताओं और संगीत प्रेमियों सभी के लिए उपयोगी है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. नीलू रानी. *संगीत शास्त्र एवं वाद्य सिद्धांत*. पृष्ठ संख्या 38.
2. लाल मणि मिश्र. *भारतीय संगीत वाद्य*. पृष्ठ संख्या 67.
3. सुशील कुमार घोष. *वाद्य परिचय*. पृष्ठ संख्या 42.
4. डॉ. प्रेमलता शर्मा. *भारतीय संगीत वाद्य: एक परिचय*. पृष्ठ संख्या 102.
5. आचार्य बृहस्पति. *वाद्य वर्गीकरण*. पृष्ठ संख्या 59.
6. Singh, B. (2024). Usefulness and challenges of distance learning system in classical music. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, 03(01), 196–209. <https://doi.org/10.59231/sari7665>

Received on Oct 07, 2025

Accepted on Nov 25, 2025

Published on Jan 01, 2026

प्राचीन मध्य तथा आधुनिक काल में वाद्य वर्गीकरण © 2026

by उज्ज्वल is licensed under CC BY-NC-ND 4.0